

Shri Raghunatha Temple MSS. Library,
JAMMU

No. ५५०० - घ

Title षडक्षर स्तोत्रम्

Author +

Extent ४ Age +

Subject संपूर्णम्

पञ्चदशस्तोत्र

नं. १००५

नं. १०४८-का
अक्षर संम

पृष्ठ ४

ॐ नमः शिवाय ॥ ॐ दसभुजमंड
लर्पचवदनशिवत्रये सोभाशि
वस्तुखदे ॥ जटाजूटमैरंगाविरा
जे सरवनकुंडल अनिरमने ॥ जै जै
स्वामी परमपराकृत ॐ कारेशिवत

श्री
१

वशरणं॥ नमामिशोकं भजामि
शोकं नमामिशोकं त्वं शरणम्
भस्मी मंगले पन सर्वो गोशिवर्त
दिवाह्न नम्रतिरमणं॥ वामो गेगि
विजाहे विराजितं मंडं मवाजत

धुनिमधुरं॥ जैजैशिव॥ २॥ लला
टचमकतरजनीयोनायकपि
नाकभूषणप्ररोश॥ त्रिशूलचम
कतविंदुतसोभेब्रह्मानाचतधु
निमधुरं॥ जैजैशिव॥ ३॥ मृगच

शि०
२

मीवरअरुवाचैवररुकरकपाल
मालाअंगेशो॥पंचवदनपराग
एपतसोहैष्टष्टेगौरीपतिज्याले
शो॥जैजैशिव॥५॥नर्मदाकावी
रेसंगममध्येसोवतगौरीसीधरे

इन्द्रादिकसुरसेवतनिसदिनरेभा
वाजतभुनिमभुरं॥ जैजैशिव॥ थ
सिद्धेश्वरअमरेश्वरशंकरकपिले
श्वरश्रीकोटीशं॥ कुपोलसंगम
निर्मलजलसवकोतीरध्वजलत्र

शि.
३

गङ्गारणे ॥ जै जै शिव ॥ ६ ॥ मंगलम
रत्नीप्रणवा सष्टकः शिवश्च दम्भु
तामृदु भवने ॥ सनकादिकपठे
स्तोत्रमनवां कितहेतुर्गेशां ॥ ७
जै जै शिव परंपरा कृतो कवि शि

वत्वंशादणं॥ नमामिषोकरभ
जामिषोकरनमामिषोकरत्वंशा
दणम्॥ य ॥ इति षड्द्वारस्तोत्रम्

१२६
१२५

